टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

पीस ऑफ माइंड चैनल 24 घंटे

आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे

दिशा चैनल : सायं 5-30 से 6-00

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)

उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान,महाराष्ट्र

ईटीवी – उड़ीसा, कर्नाटक –सुबह 5.30–6.00 (प्रतिदिन)

मो टीवी – तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक

मो म्युजिक – तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक

भक्ति – तेलगु सुबह 10.00

विदेश –आस्था इंटरनेशनल में – यूके – 8.40 जीएमटी

यूएसए व कनाडा 8.40 ईब, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्युजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें – 9414152296

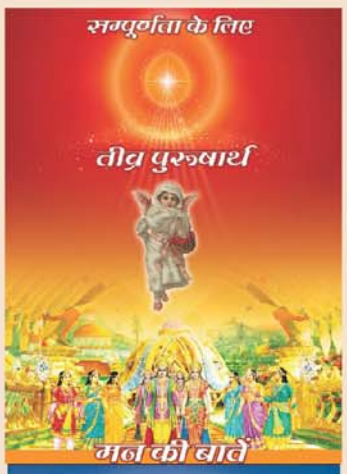

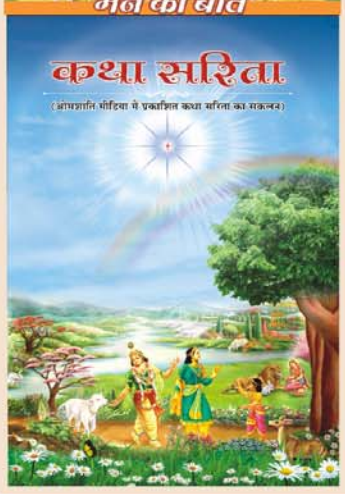

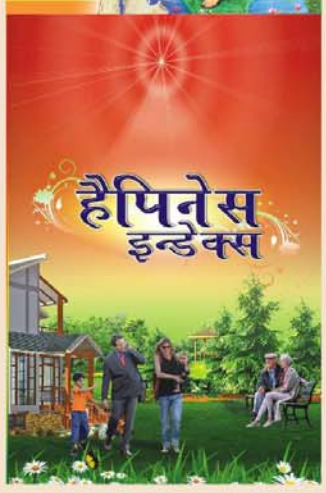

पाठकों की विशेष मांग पर 'ओम शांति मीडिया' में निरंतर प्रकाशित हो रही शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह ''कथा सरिता'' तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह ''हैप्पीनेस इंडेक्स'' अब संकलन के रूप में उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

नीयत का प्रभाव

कुछ लोकोक्तियां अथवा कुछ मुहावरे, अपनी बात को दूसरों तक इशारे में पहुंचाने के लिए मनुष्य इस्तेमाल करता है। इसमें बोलचाल की भाषा में एक मुहावरा प्रयोग किया जाता है ''दिल साफ मुराद हासिल'' अर्थात् मन शुद्ध है तो इच्छा पूर्ण हो सकती है। परन्तु मनोस्थिति को प्रथम स्थान दिया गया है। कई बार, आपने देखा होगा कि कुछ नवनिर्मित भवनों के बाहर की तरफ भिन्न-भिन्न भयानक रूपों से चित्रित कुछ मटके लगे हुए होते हैं। लोगों का जिसके विषय में कहना है कि भवन को 'नजर' न लगे। वास्तव में देखा जाए तो ये 'नजर' क्या चीज होती है? देखने में ऐसा आता है कि मन की शुभ-अशुभ भावनाओं के प्रकम्पन्न किसी भी चीज पर अच्छा या बुरा प्रभाव छोड़ते हैं। कोई मनुष्य जब किसी चीज को देखता हुआ खुश नहीं होता और ईर्ष्या वा घृणा की भावनाएं उसके मन में पैदा होती हैं, तो वह अपना प्रभाव उस चीज पर अपने अशुभ प्रकम्पनों के रूप में छोड़ता जाता है। इस तरह हम देखते हैं कि मनुष्य की शुद्ध और अशुद्ध मनोवृत्ति का प्रभाव किस तरह किसी अन्य प्राणी पर, प्रकृति पर या वायुमण्डल पर पड़ता है, जिसके प्रभाव में आने से उनमें परिवर्तन होने लगता है, द्वापर युग के अन्त की एक बात याद आती है कि - एक राजा अपने मंत्री के साथ शिकार पर निकला। शिकार की खोज में वे दोनों जंगल में आगे की ओर बढ़ते जा रहे थे। इतने में राजा को एक शिकार दिखाई पड़ा और उस शिकार के पीछे भागते-भागते राजा बहुत आगे निकल गया और मंत्री का घोड़ा थोड़ा बिदक जाने के कारण पीछे रह गया। मंत्री को, सख्त प्यास लगी थी। प्यास बुझाने के लिए वह इधर-उधर देखने लगा कि कहीं से उसकी प्यास बुझ सके। थोड़ी ही देर के पश्चात् उसे एक कुटिया दिखाई पड़ी। वह कुटिया एक किसान की थी, जिसने कि अपने आस-पास की जमीन पर खेती की हुई थी, जहां बहुत ही सुंदर भरपूर हरियाली वाले वृक्ष लगे हुए थे और उन वृक्षों पर बहुत ही सुंदर दिखने वाले पौष्टिक और रसीले फल लगे हुए थे, जिनको देखते ही खाने का मन हो आता था। मंत्री जी अपनी प्यास बुझाने के लिए उस कुटिया के दरवाजे पर पहुंचे और वहां पहुंचते ही उन्होंने दस्तक दी, जिसे सुनकर उस कुटिया का मालिक वह किसान बाहर आया और आगन्तुक की तरफ देखते हुए बोला कहो महाराज, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? मंत्री जी ने कहा अभी तो मुझे केवल बहुत जोर से प्यास लगी है, अगर आप जल पिला दें तो बड़ी राहत मिलेगी। वह किसान अपने बाग में गया और वहां से दो-चार फल तोड़ लाया, उन फलों से रस निकाल कर बड़े ही आदर भाव से उसने आगन्तुक को वह फलों का स्वादिष्ट रस भेंट किया। मंत्री बहुत ही प्रसन्न हुए क्योंकि एक तरफ तो उनकी प्यास बुझी दूसरे तरफ, रसीले तथा पौष्टिक पदार्थ भी खाने को मिले।

परन्तु, क्योंकि वह मंत्री थोड़ा लोभवृत्ति वाला व्यक्ति था, इसलिए उसकी वृत्ति में उन फलों को देख लोभ भर गया। उसने किसान को धन्यवाद किया और वहां से चल पड़ा। मंत्री का यह स्वभाव था कि वह सदा पैसा इकट्ठा करने की उधेड़बुन में लगा रहता था। ताकि राजा खजाना भरपूर देखकर उसे बहुत महत्व दे। इसलिए उसे रास्ते में विचार आया कि यह फल तो बहुत अच्छे थे। बहुत रसीले, मीठे, पौष्टिक थे। स्वादिष्ट भी बहुत थे। उसने सोचा इस देश की धरती की पैदावार तो बहुत अच्छी है, इसलिए यहां की धरती पर काफी 'कर अथवा लगान' लगाना चाहिए।

जब मंत्री वापस महल में पहुंचा और राजा की कुशलपूर्वक पहुंच के बारे में समाचार लेने के लिए उनसे मिला तो उसने सारा किस्सा राजा को कह सुनाया कि रास्ते में वह एक किसान की कुटिया में पानी पीने के लिए रूका था, किसान ने उसे पानी की बजाए जो फलों का रस पिलाया था, उनकी महिमा करते हुए कि वह फल कितने पौष्टिक, कितनी अच्छी नस्ल के थे, ये बताते हुए उसने राजा से कहा कि महाराज, ये मैं इसलिए सुना रहा हूँ क्योंकि इसके विषय में मेरा एक सूझाव है, अगर हुजूर उसे पसन्द करें तो वह हुक्मनामा जारी कर दे।

राजा बोला! मंत्री जी आपकी राय, सलाह और सुझाव सदा ही अच्छे होते हैं, उनसे सरकार को सदा फायदा ही होता है। अवश्य ही अब भी कोई लाभकारी राय ही होगी, कहिए क्या कहना चाहते हैं? मंत्री बोला, ''महाराज मेरा ऐसा विचार है कि जिस धरती से इतना स्वादिष्ट, रसीले, पौष्टिक, लुभावने फल उगते हैं तो जरूर किसान उनकी बिक्री से अच्छा आर्थिक लाभ लेता होगा। अत: मैं ऐसा समझता हूँ कि यहां की धरती पर कर अथवा लगान की रकम बढ़ा देनी चाहिए।''

राजा बोला, मंत्री जी, आपने जो बात कही है वो मुझे भी उचित लगती है और हमें पसंद है, इसलिए दरबार का हुक्म है कि ऐसा ही किया जाये। राजा की स्वीकृति प्राप्त होते ही मंत्री ने हुक्मनामा जारी कर दिया।

इस तरह से समय बीतता जा रहा था, कुछ वर्ष पश्चात् मंत्री जी राजा के साथ फिर से उसी कुटिया के समाने आ रूके अपनी प्यास बुझाने के लिए। किसान ने आगन्तुकों को आते देख अपने स्वभाव के अनुसार उन दोनों का आतिथ्य किया। वह बाग में गया और छोटी-सी टोकरी में फल भर कर ले आया और उन फलों से रस निकालने लगा परन्तु इस बार इतने सारे फलों से थोड़ा ही रस निकला। वह रस भी न तो पीने में स्वादिष्ट था और न ही पौष्टिक। मंत्री जी को फलों के रस से इस बार आनंद नहीं आया। मंत्री जी देख रहे थे कि फल सूखे-सूखे से हैं, न तो वे पहले जैसे रसीले थे, न ही मीठे थे, और न ही स्वादिष्ट थे। आखिर मंत्री जी से रहा न गया। उन्होंने उस किसान से पूछ ही लिया। मंत्री ने कहा, जमींदार जी शायद आपको याद नहीं, पिछली बार जब मैं आया था तब भी आपने मुझे रस पिलाया था, परन्तु उन फलों के रस में और इन फलों के रस में तो रात-दिन का अंतर है। समझ में नहीं आया वही खेत, वही बीज है, उनका संरक्षण करने वाले आप भी वही हैं, फिर इनमें इतना अंतर क्यों पड़ गया?

किसान ने दोनों की तरफ देखा और कहा, महाराज, मुझे आपका परिचय नहीं है कि वास्तव में आप कौन हैं? इसलिए सच्ची बात बताने में मुझे कुछ संकोच हो रहा है। मंत्री बोला, जमींदार जी, इसमें संकोच करने की बात नहीं है। आप नि:संकोच बताइये कि क्या बात है? किसान ने कहा सच बतलाऊं महाराज, हमारे राजा की नीयत बदल गई है, जिसके कारण ही यह सब हुआ। अच्छी फसल, अच्छी पैदावार देख राजा ने जमीन का लगान बढ़ा दिया। उसकी इस लोभवृत्ति के परिणाम स्वरूप यह सब हुआ। राजा ने जब यह सुना तो उसके पैरों से जमीन निकल गई। मंत्री जी भी खिसियाई नजरों से राजा की तरफ देख रहे थे। दोनों की बुद्धि में वास्तविकता समझ आ गई थी।

इससे हमें यही शिक्षा मिलती है कि मनुष्य की मनोवृत्ति के प्रभाव से, चाहे वह शुभ है या अशुभ, शुद्ध है या अशुद्ध है, हर एक चीज उससे प्रभावित होती है चाहे वह कोई व्यक्ति विशेष है चाहे प्रकृति है या चाहे वायुमण्डल है। हमारी मनोवृत्ति के प्रभाव से भी किसी भी चीज में परिवर्तन आने लगता है। तो ऐसे विशेष समय में जब स्वयं परमपिता परम आत्मा ब्रह्मा मुख द्वारा ज्ञान-धारा प्रवाहित कर हमारी मनोवृत्तियों को पावन बना रहे हैं, जिनके आधार से ही हम एक श्रेष्ठ परिवर्तन लाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं, पूरी तरह से लाभान्वित हो जन-जन के कल्याण अर्थ सेवा में लग जायें। अपनी पावन मनोवृत्ति द्वारा इस विश्व को श्रेष्ठ

खुद को जानना और परम शक्ति से परिचय ही सच्चा जीवन है

जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है उस जीवन को समझना, जो परमात्मा ने हमें दिया है। हम उम्र बिता देते हैं, पर जीवन क्या है यह नहीं समझ पाते। रोजी-रोटी, पूजा-पाठ ही जीवन नहीं है। दरअसल खुद को जान लेना और इसके बाद उस परम शक्ति से परिचय हो जाना सच्चा जीवन है। भगवान महावीर ने मनुष्य के जीवन को दो चरणों में बांटकर बड़ी सरलता से समझाया है। जैन मुनि श्री चंद्रप्रभजी कहते हैं - भगवान ने मुक्ति के लिए दो मार्ग बताए हैं - एक श्रमणत्व का और दूसरा श्रावकत्व का। एक मार्ग कठोर है तो दूसरा अपेक्षाकृत सरल। इसे दूसरी तरह से कहें तो मुनि-जीवन विशुद्ध रूप से तलवार की धार पर चलता है और श्रावक-जीवन दुधारी तलवार पर चलता है। श्रावक-जीवन को दुधारी तलवार इसलिए कहा गया है कि इसके जीवन में योग और भोग दोनों ही तरह के अवसर होते हैं, जबकि श्रमण यानी मुनि का जीवन विशुद्ध रूप से योग के लिए समर्पित रहता है। एक श्रावक अर्थात् अभ्यास का जीवन जीने वाले को भोग भोगते हुए भी अपनी योग-साधना का लक्ष्य आँखों में रखना पड़ता है। श्रावक-जीवन श्रमण-जीवन से भी कठिन है, बशर्ते व्यक्ति श्रावक जीवन को आचरित करने का सच्चा प्रयास करें। गृहस्थ होते हुए भी लोग संन्यस्त की स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। सारा मामला संयम और अभ्यास का है। भगवान महावीर संयम का प्रतीक है। वे कहते हैं कि अभ्यास हमें उस चरम पर ले जा सकता है, जहां से जीवन जाना जा सकता है। मनुष्य के अंतर्घट में विराजित परमात्मा का परिचय अभ्यास मार्ग से ही संभव है।